

अ० क्र० विषय

पृष्ठाङ्क

- (vii) पञ्चक्रोशात्मक लिङ्ग की महिमा।
 (viii) विष्णु के द्वारा काशी की महिमा का वर्णन।
 (ix) गुरुपदिष्ट काशीमाहात्म्यवर्णन।
३. **काशीवासीजनों द्वारा किये जाने वाले कर्तव्य धर्म।** ५८-८२
 (i) काशीवासी जनों द्वारा त्याज्य धर्मों का वर्णन।
 (ii) काशीमहत्त्ववर्णन।
 (iii) काशी में स्थित अनेक प्रकार के वनों का वर्णन।
 (iv) काशी में वास करने का फल।
 (v) काशीस्थित पक्षिसङ्घों की शिवभक्ति।
 (vi) शिष्यद्वारा गुरुपदेश की प्रशंसा।
 (vii) काशी का उत्कृष्टत्व।
 (viii) दीपक के प्रति गुरु का काशीवास के लिये आदेश।
४. **कलि के दोष, दोष से ग्रस्त व्यक्ति की मुक्ति का उपाय।** ८३-१०५
 (i) कलि के दोषों से मुक्ति के विषय में गुरु-शिष्य संवाद।
 (ii) कलिदोष से मुक्ति के विषय में पूर्व के इतिहास का वर्णन।
 (iii) अग्निशर्मा और सोमशर्मा बन्धुओं की काशी को लेकर परस्पर वार्ता।
 (iv) तपस्या से सिद्धिप्राप्त सोमशर्मा का वर्णन।
 (v) धर्मराज और सोमशर्मा का संवाद।
५. **कलि-दोषों के विषय में गुरु-शिष्य संवाद।** १०६-१३६
 (i) कलिस्थित लोगों के आचरण का वर्णन।
 (ii) कलियुग में धर्म का अपकर्षत्व (हास)।
 (iii) काशी में कलि का प्रवेश है या नहीं इस विषय की चर्चा।
 (iv) युद्धोद्यत राजा महासेन और राजा सुमेधा का वर्णन।
 (v) राजा महासेन की पराजय।
 (vi) पराजित काशीराज का पश्चात्ताप।
 (vii) राजा सुमेधा को वैराग्यप्राप्ति।
६. **कपिल के योग के विषय में सूत का ऋषियों से संवाद।** १३७-१५१
 (i) कपिलोक्त सांख्यप्रक्रिया।

अ० क्र० विषय

पृष्ठाङ्क

- (ii) काशीमहत्त्व वर्णन।
 (iii) काशी आदि की महिमा।
७. **काशी में किये गये पापों से मुक्ति के उपाय।** १५२-१६७
 (i) उक्त विषय में शिवापार्वती का शिव से संवाद।
 (ii) ब्राह्मण और धर्मपथ का संवाद।
 (iii) काशी में धर्मकार्यसम्पादन का माहात्म्य।
 (iv) काशी में किये जाने वाले मन्दिर और तालाबों के जीर्णोद्धार से अत्यधिक पुण्यप्राप्ति।
८. **काशी में धर्मरहित व्यक्ति हेतु प्रायश्चित्त।** १६८-१८१
 (i) प्रायश्चित्त के विषय में भगवान् शङ्कर और जैगीषव्य ऋषि का सम्वाद।
 (ii) काशीमाहात्म्य को लेकर स्कन्द और अगस्त्य का संवाद।
 (iii) प्रायश्चित्त करने वाले को काशी में ज्ञान से सिद्धि।
 (iv) प्रायश्चित्त करने वाले जन की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करने से पापशान्ति।
 (v) काशीवास से जीवनमुक्ति।
९. **ऋषिपुत्र-मण्डप का आख्यान।** १८२-२०७
 (i) मण्डप के द्वारा उसके मित्रों को धोखा देने पर उन जुलाहा और नाई के बालकों का उसके घर आना।
 (ii) मण्डप का कर्दमेश्वर के निकट रात्रिजागरण।
 (iii) मण्डप की भगवान् विश्वेश्वर की कृपा से पाप से मुक्ति।
 (iv) पापमुक्त हुए मण्डप का वर्णन।
 (v) पश्चात्तापपूर्वक प्रायश्चित्तवर्णन के प्रसङ्ग में विशालाक्षी का आख्यान।
 (vi) काशीक्षेत्रप्रदक्षिणा का महत्त्व।
१०. **पञ्चक्रोशी को उद्देश्य कर देवी द्वारा किये गये प्रश्न का भगवान् शिवद्वारा दिया गया उत्तर।** २०८-२२१
 (i) पञ्चक्रोशीक्षेत्रप्रदक्षिणाक्रमवर्णन।
 (ii) काशी क्षेत्र में पञ्चक्रोशीस्थित देवताओं का वर्णन।

अ० क्र० विषय

पृष्ठाङ्क

(iii) पञ्चक्रोशी में देवयात्रा का वर्णन।

(iv) पञ्चक्रोशीस्थित देवताओं का वर्णन।

११. पञ्चक्रोशी यात्रा नियम वर्णन।

२२२-२३३

(i) क्षेत्रसंन्यास लिये लोगों के लिये प्रदक्षिणा का क्रम।

१२. अशक्त लोगों के लिये स्वल्प प्रयास से साध्य होने वाले प्रायश्चित्त का वर्णन

२३४-२७३

(i) देवमन्दिरसहित शिवलिङ्गस्थापना का महत्त्व।

(ii) इससे सम्बन्धित महातेजानामक क्षत्रिय का उपाख्यान।

(iii) महातेजा का अपनी दासी से सम्वाद।

(iv) महातेजा क्षत्रिय का आख्यान।

(v) कथा-श्रवण के प्रसङ्ग में काशी विश्वनाथ क्षेत्र का माहात्म्य।

(vi) काशी क्षेत्र में पुण्यकार्य-सम्पादन का महत्त्व।

(vii) काशी में किये गये पापों के प्रायश्चित्त का वर्णन।

(viii) काशी में किये पापों से मुक्तिहेतु सरल से सरल उपाय का वर्णन।

(ix) महातेजा द्वारा ब्राह्मण को गृहदान देने का वर्णन।

१३. काशी में स्थित प्रमुख तीर्थों का वर्णन।

२७४-२९०

(i) काशी में सप्तपुरियों में वास को लेकर शिव और शक्ति का संवाद।

(ii) काशी में सप्तपुरियों का माहात्म्य।

(iii) सात पुरियों का वर्णन और शिवलिङ्गस्थापना।

(iv) काशीवासी स्वधर्मपरायण लोगों की प्रशंसा।

१४. काशी की प्रशस्ति को लेकर ब्रह्मा का मनु से संवाद।

२९१-३०४

(i) काशीमाहात्म्य के प्रसङ्ग में देवोंसहित ब्रह्मा का यमराज के साथ शिव के पास जाना।

(ii) अविमुक्त क्षेत्र की विलक्षणता का वर्णन।

(iii) काशी में धर्महेतु वास करने वालों की प्रशस्ति।

१५. काशी विश्वनाथ के सान्निध्य में हरि और हर के बीच अभेद दृष्टि के विषय में दृष्टान्त के सहित प्रस्ताव का कथन।

३०५-३१४

अ० क्र० विषय

पृष्ठाङ्क

(i) द्विजजेता ब्राह्मण को ब्रह्मराक्षसत्व की प्राप्ति।

(ii) द्विजजेता ब्राह्मण की ब्रह्मराक्षस योनि से मुक्ति।

१६. काशी में नित्य यात्रा विधान का वर्णन।

३१५-३२९

(i) काशी में अविमुक्त क्षेत्र की महिमा।

(ii) काशीवासियों की साधनविधि का वर्णन।

(iii) काशी में पाप का निषेध।

(iv) काशीवाससाधनविधि।

१७. काशी को लिङ्ग कहने पर विचार।

३३०-३४६

(i) क्षेत्र में किये जानेवाले पापों से मुक्ति के साधनों का वर्णन।

(ii) काशीवासियों को शिवस्वरूपप्राप्ति का वर्णन।

(iii) अविमुक्त क्षेत्र की विलक्षणता।

(iv) काशीवास से कलिप्रभाव से मुक्ति।

१८. पापियों के भार को वहन करने में असमर्थ काशी का भगवान् के साथ संवाद।

३४७-३७३

(i) काशी का भगवान् के साथ सम्वाद।

(ii) कामकला का प्रायश्चित्तहेतु उद्वेग का वर्णन।

(iii) काशीवास में पापनिषेध का माहात्म्य।

(iv) काशी के माहात्म्य के विषय में सुरसा-कामकला-संवाद।

(v) कामकला के उपाख्यान में काशी के अनुग्रह का वर्णन।

१९. वीरसेन के उपाख्यान में श्रद्धा का स्वरूप और उसका फल।

३७४-३९५

(i) कामकलोपाख्यान का वर्णन।

(ii) कामकला के उपाख्यान में रौद्राक्ष भिल्ल की कथा।

(iii) रौद्राक्षभिल्ल का ब्राह्मण से सम्वाद।

(iv) काशी में भिल्ल का ब्राह्मणों से सत्कथा का श्रवण।

२०. ऋषिसूतसम्वाद में श्रवणविधि का कथन।

३९६-४२३

(i) रागसहित और रागरहित वक्ताओं का विवेचन।

(ii) जनक के प्रति याज्ञवल्क्य का उपदेश।

(iii) सोपाधि और निरूपाधि ब्रह्म का वर्णन।

- (iv) ज्ञान प्रतिपादन विषय के महत्त्व का वर्णन।
- (v) ज्ञान, कर्म और भक्ति करने वाले सभी का काशी में अन्तर्भाव।
- (vi) काशी भोग और मोक्ष दोनों प्रदान करती है।
- (vii) शिवाज्ञापालन से सभी देवताओं की काशी में अवस्थिति।
- (viii) काशी में मुक्तिप्राप्ति का वर्णन।
- (ix) माता काशी के महत्त्व का वर्णन।

२१. गङ्गामहिमा के विषय में सम्यक् उपोद्घात।

४२४-४४९

- (i) गङ्गा के माहात्म्य का वर्णन।
- (ii) गङ्गामाहात्म्य के सन्दर्भ में पाण्डुदेश के राजा पुण्यकीर्ति की कथा।
- (iii) पाण्ड्यदेश के राजा द्वारा राज्यभार समर्पित करने के उपरान्त काशी में नित्य सेवा का वर्णन।

२२. ऋषिसूत-सम्वाद-वर्णन।

४५०-४६९

- (i) नाना नरकों के विषय में मुनियों का प्रश्न।
- (ii) सदस्य-धर्मराज-सम्वाद।
- (iii) धर्मराजद्वारा काशीमाहात्म्य का वर्णन।

२३. सदस्यों का धर्मराज के प्रति नरक-यातनाओं के विषय में प्रश्न।

४७०-४९२

- (i) सदस्य-धर्मराज सम्वाद।
- (ii) महाराज जनक का ऋतध्वज से संवाद।
- (iii) जनक का जडभरत से सम्वाद।
- (iv) ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और शूद्रों के अपराधवर्णन।
- (v) काशीमाहात्म्य के विषय में शिव और विष्णु का संवाद।
- (vi) काशी में पाप को वर्जित रखना यही परम धर्म है।

२४. विष्णु के द्वारा काशी माहात्म्य का वर्णन।

४९३-५१०

- (i) काशीवास की महिमा।
- (ii) विष्णु के द्वारा काशीवास में आने वाले विघ्नों का वर्णन।
- (iii) काशीमाहात्म्य के प्रसङ्ग में सनातन ब्राह्मण की कथा।

- (iv) पुत्र के अपराध के विषय में बुलाये गये ब्राह्मण का राजा के साथ संवाद।
- (v) विष्णु के मुख से काशीवास की प्रशंसा।

२५. विशेष रूप से काशीवास करनेवाले के धर्म का वर्णन। ५११-५३१

- (i) पाशुपत हिरण्यगर्भ का धर्मनिधि के साथ संवाद।
- (ii) काशी में धनादि सञ्चय का निषेध।
- (iii) काशीवास के परिणाम स्वरूप पाशुपत की मुक्ति।
- (iv) काशी में दान की महिमा।
- (v) काशी में ऋणशोधन के सन्दर्भ में उपायों का वर्णन।

२६. काशीवासियों की स्थिति का वर्णन।

५३२-५५०

- (i) काशीवास में देह और आत्मा के अध्यास करने पर दुःखप्राप्ति का वर्णन।
- (ii) मिथ्यावादरूपी पाप का वर्णन।
- (iii) पुराणों-पुराणों का वर्णन।
- (iv) काशी के ब्रह्मस्वरूप का वर्णन।
- (v) काशी में मरने से मुक्ति इस विषय का वर्णन।

२७. 'काशीरहस्य' का कथासार

५५१-५९६

२८. काशीरहस्यस्य सूक्ति-रत्नावली

५९७-६२६

२९. परिशिष्ट-१

६२७-६२८

३०. परिशिष्ट-२

६२८-६२९

३१. पंचक्रोशी यात्रा विधि

६२९-६३४

३२. अनुक्रमणिका

६३५-६५९

